

(२)

जिनवर चरण भक्ति वर गंगा, ताहि भजो भवि नित सुखदानी ।
स्याद्वाद हिम-गिरि तैं उपजी, मोक्ष महासागरहि समानी ॥८॥
ज्ञान-विज्ञान रूप दोऊ ढाये, संयम भाव लहर हित आनी ।
धर्मध्यान जहँ भँवर परत है, शम-दम जामें सम-रस पानी ॥९॥
जिन-संस्तवन तरंग उठत है, जहाँ नहीं भ्रम-कीच निशानी ।
मोह-महागिरि चूर करत है, रत्नत्रय शुध पंथ ढलानी ॥१०॥
सुर-नर-मुनि-खग आदिक पक्षी, जहाँ रमत निज समरस ठानी ।
'मानिक' चित्त निर्मल स्थान करी, फिर नहीं होत मलिन भव प्राणी ॥११॥

(३)

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये ॥८॥
मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण में, काल अनादि घूमे,
सम्यग्दर्शन भयौ न तातैं, दुःख पायो दिन दूने ॥९॥
है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता ।
हम पावैं निजस्वरूप आपनो, क्यों न बनैं गुणज्ञाता ॥१०॥
जीव अनन्तानन्त पठाये, स्वर्ग-मोक्ष में तूने ।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने ॥११॥
भव्यजीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारे ।
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण-गण सारे ॥१२॥
औगुण तो अनेक होत हैं, बालक में ही माता ।
पै अब तुम-सी माता पाई, क्यों न बने गुणज्ञाता ॥१३॥
क्षमा-क्षमा हो सभी हमारे दोष अनन्ते भव के ।
शिव का मार्ग बता दो माता, लेहु शरण में अबके ॥१४॥
जयवन्तो जिनवाणी जग में, मोक्षमार्ग प्रवर्तों ।
श्रावक 'जयकुमार' बीनवे, पद दे अजर अमर तो ॥१५॥